INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 2 | MARCH – 2025

प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी चिंतन का मनोवैज्ञानिक पक्षः एक समीक्षा

माया देवी
शोधार्थी, हिंदी विभाग, एन. आई. आई. एल. एम. यूनिवर्सिटी (कैथल) हरियाणा.

सार

प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी के मनोवैज्ञानिक पक्ष का अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थ चित्रण मिलता है। वे समकालीन स्त्री लेखन की उन अग्रणी रचनाकारों में हैं जिन्होंने स्त्री के भीतर की जटिल मानसिक संरचनाओं को समझने और अभिव्यक्त करने का सशक्त प्रयास किया। उनके उपन्यास केवल सामाजिक स्थितियों का विवरण नहीं देते, बल्कि नारी की भीतरी भावनाओं, संघर्षों, इच्छाओं और मनोदशाओं को भी गहराई से उकेरते हैं। प्रभा खेतान स्त्री को केवल एक संवेदनशील पात्र के रूप में नहीं, बल्कि एक विचारशील, आत्ममंथन करने वाली, अपने अस्तित्व की पहचान में जुटी, आंतरिक द्वंद्वों से जूझती जीवंत इकाई के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनके उपन्यासों में नायिकाएँ पारंपरिक समाज के दबाव, पारिवारिक उत्तरदायित्व और आत्मसम्मान के बीच झूलती दिखाई देती हैं, जहाँ उनकी मानसिक बेचैनी, अकेलापन, असुरक्षा, आत्मसंघर्ष और प्रेम की आकांक्षा मनोवैज्ञानिक परतों में प्रकट होती है। प्रभा खेतान का स्त्री विमर्श महज सामाजिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्त्री मन की अंतर्यात्रा को भी साहित्यिक रूप में व्यक्त करता है। उनके लेखन में स्त्री के आत्मबोध, आत्माभिव्यक्ति और स्वतंत्रता की गूंज है, जो नारी मनोविज्ञान के विविध पक्षों को उजागर करता है। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी स्त्री चेतना के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरक स्रोत बना हुआ है।

प्रमुख शब्दः प्रभा खेतान, नारी विमर्श चिंतन, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्वतंत्रता, राजनीतिक जागरूकता, मनोवैज्ञानिक संघर्ष.

भूमिकाः

साहित्य मानव मन का सूक्ष्म अध्ययन एवं विश्लेषण करता है। मनुष्य की स्वभावगत विशेषताओं का आकलन मनोवैज्ञानिक परिवेश से होता है। मनुष्य के मन में एक साथ अनेक कल्पनाएँ, भावनाएँ एवं विचार समाहित होते है। प्रभा खेतान ने नारी मन की स्थिति को समझा और उसकी पर्तों को खोलकर रखा। वर्तमान समय में महिला उपन्यासकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज में व्याप्त विषमताओं, नारी शोषण और स्त्री जीवन की जटिल समस्याओं को प्रभावी ढंग से उजागर किया है। स्वतंत्रता के दशकों बाद भी स्त्री आज भी आर्थिक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर संघर्षरत है। यह कटु सत्य है कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना स्त्री की राजनीतिक या सामाजिक स्वतंत्रता अधूरी रह जाती है।

नारी जीवन की पीड़ा, उसकी आकांक्षाएँ, मानसिक द्वंद्व और संघर्ष ये सभी उसके मनोविज्ञान का हिस्सा हैं, जिसे साहित्य में विश्लेषित किया गया है। उपन्यासकार अपने अनुभव, चेतना और संवेदनाओं के माध्यम से युगीन परिस्थितियों का चित्रण करता है, और यही साहित्य की शक्ति है। जैसा कि रामदरश मिश्र ने कहा है

साहित्य मानव संवेदना का ही रूप है, और बिना उसे आत्मसात किए सशक्त साहित्य संभव नहीं। आज स्त्री मनोविज्ञान का क्षेत्र केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि यौन शोषण, हर्ष–विषाद, आशा–निराशा जैसे विविध पहलुओं को भी समाहित करता है। महिला कथाकारों ने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से स्त्री के आंतरिक जीवन की बारीकियों को सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, उषा प्रियंवदा सहित अनेक लेखिकाओं ने समकालीन हिंदी उपन्यास को स्त्री विमर्श की दृष्टि से समृद्ध किया है। इन्हीं में एक प्रमुख नाम है प्रभा खेतान, जिनका साहित्यिक योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने सीमोन द बोउआर की प्रसिद्ध कृति The Second Sex का हिंदी रूपांतरण कर स्त्री विमर्श को भारतीय संदर्भों में नई दिशा दी। उनके उपन्यास आओ पेपे घर चलें (1990), तालाबंदी (1991), छिन्नमस्ता (1993), अपने–अपने चेहरे (1994) और पीली आँधी (1996) नारी चेतना, सामाजिक यथार्थ और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के सशक्त उदाहरण हैं।

मनोविज्ञान एक ऐसी अध्ययन प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मन की गहराई में छिपी गतिविधियों को कारण और प्रभाव के आधार पर समझने का प्रयास किया जाता है। 'मनोविज्ञान' शब्द अंग्रेजी के 'Psychology' का हिंदी रूपांतरण है। यह शब्द दो ग्रीक शब्दों – Psyche (अर्थात आत्मा) और Logos (अर्थात अध्ययन या विचार करना) – से मिलकर बना है। प्रारंभ में यह आत्मा के अध्ययन के रूप में देखा गया, परंतु आधुनिक संदर्भ में यह मन और व्यवहार के वैज्ञानिक विश्लेषण का विषय बन चुका है।

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसारः

मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अनुशासन है जो मानव और अन्य जीवों के मानसिक क्रियाओं और व्यवहारों का अध्ययन करता है।

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसारः

मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मानव की आत्मा और मन की प्रकृति, क्रियाएं और विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन करता है।

इस प्रकार, मनोविज्ञान एक शैक्षिक और प्रयोगात्मक विज्ञान है जो जीवों की मानसिक प्रक्रियाओं, अनुभवों और व्यवहारों का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। सरल शब्दों में, यह वह विज्ञान है जो जीवों की मानसिक और शारीरिक प्रतिक्रियाओं को उनके पर्यावरण के संदर्भ में समझने का कार्य करता है। मनोविज्ञान को व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन का विज्ञान कहा जाता है। यह अनुभवों का विज्ञान भी है, जिसका उद्देश्य चेतना की प्रक्रियाओं के तत्वों का विश्लेषण करना, उनके आपसी संबंधों को समझना और उन्हें नियंत्रित करने वाले नियमों को जानना होता है।

मनोवैज्ञानिक परिवेश के अंतर्गत प्रभा खेतान ने –

1. कुंठा
2. अंर्तद्वंद्व
3. चिंता
4. क्षोभ
5. ईर्ष्या–निराशा
6. आत्म पीड़न पर पीड़न

आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने पुरुष–प्रधान समाज में नारी की भयावह स्थिति को केवल चित्रित ही नहीं किया, बल्कि उसके मनोवैज्ञानिक कारणों और प्रभावों को भी यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में बाल मनोविज्ञान और स्त्री मनोविज्ञान की स्पष्ट छवि मिलती है। उन्होंने नारी के आंतरिक द्वंद्व, अस्मिता संकट और मानसिक पीड़ा को बहुत सूक्ष्मता से उकेरा है, जिससे आज की स्त्री से जुड़ी समस्याओं को समझने का मार्ग प्रशस्त होता है।

प्रभा खेतान के उपन्यास **'आओ पेपे, घर चलें'** में नारी पात्रों की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं और आंतरिक संघर्षों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उपन्यास की नायिका मरील तलाक के बाद अपनी दो बेटियों के साथ अकेले जीवन व्यतीत कर रही है, किंतु उनके बीच आत्मीयता और भावनात्मक जुड़ाव का अभाव है। मरील पति को अपनी स्थिति के लिए दोष देती है और जब बेटी पिता से स्नेह दर्शाती है, तो उसमें ईर्ष्या जन्म लेती है। यह स्थिति स्त्री की भावनात्मक असुरक्षा को दर्शाती है। एलिजा का डॉ. डी. से असफल प्रेम उसे हीनता और आत्मपीड़ा की ओर ले जाता है। उसके आत्मालोचन में यह स्पष्ट होता है कि उसका लगाव प्रेम नहीं, बल्कि नशे जैसी आदत बन गया है। क्लारा की ओर जॉर्ज के झुकाव से एलिजा की अचेतन पीड़ा उजागर होती है, जिससे यह संदेश मिलता है कि नारी के भीतर आत्मपीड़ा की गहरी परतें होती हैं। पाश्चात्य समाज की स्त्रियाँ अपने शरीर और सौंदर्य को लेकर ग्रंथियों से पीड़ित हैं, वे शारीरिक कमियों को छिपाने हेतु हेल्थ क्लब जाती हैं और दिखावे के जीवन में आत्मविश्वास की कमी झलकती है।

हेल्गा का पात्र अपने अंदरूनी दर्द और प्रतिशोध की भावना से ग्रस्त है। उसके भीतर दया, प्रेम और करुणा के स्थान पर ईर्ष्या और द्वेष जैसे नकारात्मक भाव अधिक प्रबल हैं। वह अपने अतीत की घटनाओं को भूलना नहीं चाहती, बल्कि उनसे शक्ति ग्रहण कर बदले की भावना में जीती है। हेल्गा कहती है कि हर व्यक्ति के मन में एक निजी कोना होता है, जो केवल उसका होता है यह कथन मनुष्य की अंतरंगता और अकेलेपन की सच्चाई को उजागर करता है। नारी जीवन में प्रेम की अनुपस्थिति उसे कुंठित बना देती है। कैथी को अपनी माँ की बातें याद आती हैं, जिसमें वह अगली पीढ़ी की स्त्री को मजबूत बनने की सीख देती है। उपन्यास में यह भी दिखाया गया है कि कमजोर मानसिकता वाला व्यक्ति संकट का सामना नहीं कर पाता और आत्महत्या की ओर अग्रसर हो जाता है, जैसा कि एलिजा के आत्महत्या के प्रयास से स्पष्ट होता है।

सत्तर वर्षीय वृद्धा आइलिन का व्यवहार मानसिक असंतुलन का प्रतीक है, जो अपने से सुंदर और अमीर महिलाओं से ईर्ष्या करती है। उसका नग्न होकर ठंडे पानी से स्नान करना एक विकृति है। उपन्यास में यह भी दिखाया गया है कि कैसे महानगरीय जीवन में स्वप्न पलते हैं और टूटते हैं। सोनिया कहती है कि न्यूयॉर्क एक ऐसा शहर है जहाँ सपने बनते हैं और बिखरते हैं। प्रभा के बाल्यकाल की घटनाएं, जैसे पिता की मृत्यु, उसे मानसिक रूप से कुंठित कर देती हैं। अंततः, उपन्यास के पात्रों के माध्यम से प्रभा खेतान ने स्त्री जीवन की जटिलता, सामाजिक दबावों, आंतरिक द्वंद्व और मानसिक टूटन को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है।

'तालाबंदी' के श्याम बाबू फैक्ट्री की उलझनों और पारिवारिक संकटों के बीच घिरे हैं। एक ओर माल समय पर पार्टी को न पहुँच पाने का भय उन्हें आर्थिक विनाश की ओर धकेलता है, तो दूसरी ओर माँ जीवन–मृत्यु के द्वार पर खड़ी है। इस असहाय स्थिति में वे हीनता ग्रंथि से ग्रसित हो उठते हैं। माँ से मिलने की इच्छा होते हुए भी वे परिस्थितियों के सामने विवश हैं। जब व्यक्ति परिवार के लिए सर्वस्व समर्पित करता है, और वही परिवार उसे आहत करता है, तब उसकी आत्मा अंदर से टूट जाती है। श्याम बाबू भी अपनों की बेरुख़ी से आहत हैं। प्रेम की चाह में सब कुछ लुटा देने के बाद भी जब प्रेम नहीं मिलता, तो क्रोध में वे सबसे मुक्त हो जाना चाहते हैं। उनका मन द्वंद्व और अशांति से भर उठता है। मानसिक तनाव व्यक्ति के यौन जीवन को भी प्रभावित करता है श्याम बाबू इतने तनावग्रस्त हैं कि पत्नी सुमित्रा की इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते, जिससे वह भीतर ही भीतर पीड़ित होती है। इसी तरह 'अग्निसंभवा' की प्रभा भी हीन भावना से जूझती है। वह कहती है "आज बहुत कुछ देखकर भी अनदेखा कर देती हूँ, चुनौतियों से बचती हूँ और इसकी कीमत भी चुकाई है। औरत होने के हीनभाव से मैं अक्सर पुरुषों की दुनिया में अपने अस्तित्व को सिद्ध करना चाहती हूँ। क्या मैं औरत हूँ इसलिए यह काम नहीं करूँगी? अब करके दिखाऊँगी।"

उपन्यास '**अग्निसंभवा**' में आइवी अपने बेटे वाँग की मृत्यु को याद कर भीतर से टूट जाती है और अपने आक्रोश को प्रभा के समक्ष तीखे व्यंग्य के साथ व्यक्त करती है। वह कहती है, "प्रभा, परेशान मत हो । मेरे आँसू कब बहने लगते हैं, मुझे खुद नहीं पता चलता। मैं रोते–रोते थक चुकी हूँ। तुम नहीं समझ सकती संतान खोने का दुःख।" यह पीड़ा नारी मन की उस वेदना को दर्शाती है जिसे शब्दों में पिरोना कठिन है। इसी प्रकार उपन्यास **'एड्स'** में प्रभा अपने सहयात्री की निकटता से असहज महसूस करती है। एक अनजान पुरुष की उपस्थिति उसे भीतर तक विचलित कर देती है। वह लिखती है, "मैंने एक गहरी साँस ली, फिर अपनी साँसों पर ध्यान केंद्रित किया। अपने भीतर डूबने, चेतना को केंद्रित करने और बगल वाले यात्री से पूरी तरह कटने

की तैयारी करने लगी। मुझे किसी से कोई बात नहीं करनी। औपचारिकता जाए भाड़ में। वह बात करना चाहता है तो बगल में बैठी औरत से करे। मैंने कनखियों से देखा— दोनों बात कर रहे हैं। अच्छा हुआ।" यह प्रसंग नारी की मानसिक असुरक्षा, निजी स्पेस की आवश्यकता और पुरुष समाज के प्रति गहरे अविश्वास को दर्शाता है। दोनों ही उदाहरणों में प्रभा खेतान ने स्त्री के मानसिक संसार, उसके भीतर पलते तनाव और संवेदनशीलता को सजीव रूप में उकेरा है।

उपन्यास **'एड्स'** की नायिका प्रभा प्रेम–संबंधों से दूर रहना चाहती है, क्योंकि उसके जीवन में मिले कटु अनुभवों ने उसके मन को गहराई तक आहत किया है। अब वह हर पीड़ा को चुपचाप सहना सीख चुकी है। दरअसल, एक बार टूटा हुआ मन फिर से पहले जैसा नहीं हो सकता। जब एक सहयात्री उससे कॉफी के लिए पूछता है, तो वह भीतर ही भीतर क्रोधित हो उठती है। उसे अनुभव से पता है कि यह छोटी–छोटी बातचीत धीरे–धीरे प्रेम की ओर ले जाती है और वह इस चक्र में दोबारा नहीं फँसना चाहती। अब वह प्रेम, प्रतीक्षा और झगड़ों की उलझनों से ऊब चुकी है और अपने जीवन में किसी पुरुष को स्थान नहीं देना चाहती। पाश्चात्य समाज में आत्मीयता का अभाव व्यक्ति को गहरे अकेलेपन की ओर धकेल देता है, परंतु कभी–कभी यही अकेलापन व्यक्ति को आत्मिक शांति भी देने लगता है। प्रभा भी इस भावना को व्यक्त करते हुए कहती है, "अकेलापन एक बेबसी है। कुछ इसे ढोते हैं, लेकिन कुछ अपनी बेबसी में भी एक मकसद खोज लेते हैं और अकेलेपन में ही रस लेने लगते हैं।" यह कथन न केवल उसके आत्मसंघर्ष को उजागर करता है, बल्कि आधुनिक स्त्री की मानसिक स्थिति को भी गहराई से दर्शाता है।

उपन्यास **'छिन्नमस्ता'** की नायिका प्रिया बीमारी के दौरान अस्पताल में अपने अतीत की त्रासदियों को स्मरण करती है। जीवन में आए दुख, उपेक्षा और अकेलेपन ने उसे भीतर तक तोड़ दिया था, पर उन्हीं अनुभवों ने उसमें आत्मनिर्भरता और आत्मविश्लेषण की शक्ति भी विकसित की। वह महसूस करती है कि अकेलापन कभी–कभी आत्मचिंतन और आत्मबोध का अवसर भी देता है। बचपन से ही रंग, रूप और स्थान को लेकर माँ और परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा उपेक्षित की गई प्रिया के मन में हीनता घर कर गई थी। माँ के व्यंग्य और उपेक्षा ने उसमें विद्रोह और अपराधबोध दोनों को जन्म दिया। वह बार–बार डरावने सपनों और यौन शोषण की स्मृति से व्यथित रहती है, जिससे पुरुषों और प्रेम के प्रति उसमें घृणा और प्रतिशोध की भावना पनपती है। प्रो. मुखर्जी द्वारा छलावे के बाद वह भावनात्मक रूप से टूट जाती है और आत्महत्या तक की सोचने लगती है। धीरे–धीरे वह आत्मबल जुटाकर व्यवसाय शुरू करती है और सफल भी होती है, लेकिन पति नरेंद्र का ईर्ष्यालु व्यवहार और समाज की कटु दृष्टि उसे और अधिक मानसिक तनाव में डाल देती है। इन सबके बीच वह अपने ही अस्तित्व को लेकर संघर्ष करती रहती है और कहती है— "मैं न्यूरोटिक होती जा रही थी।" उसका यह मानसिक द्वंद्व आत्ममूल्यांकन की प्रक्रिया में बदल जाता है, जहाँ वह अपने जीवन की परत–दर–परत सर्जरी करती है। अंततः 'छिन्नमस्ता' में प्रभा खेतान ने एक ऐसी स्त्री का गहन मनोवैज्ञानिक चित्र प्रस्तुत किया है, जो टूटकर भी अपने अस्तित्व की तलाश नहीं छोड़ती और संघर्ष को ही जीवन का आधार बनाती है।

उपन्यास **'अपने–अपने चेहरे'** की रमा एक आत्मनिर्भर स्त्री है, जो परंपरागत रूप से पुरुष के सहारे जीने वाली 'लता' नहीं बनना चाहती। इसी सोच के कारण वह मि. गोयनका के साथ सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग नहीं लेती। रमेश की सफलता में उसकी भूमिका होने के बावजूद, विवाह के समय परिवार द्वारा उसकी उपेक्षा रमा को भीतर तक आहत करती है। वह कहती है— "मैं दूसरी औरत हूँ ना... फिर ममत्व का सवाल ही कैसे उठता है?" यह कथन उसके टूटे आत्मसम्मान और हाशिए पर डाली गई उसकी पहचान को उजागर करता है। रमा आर्थिक रूप से सक्षम है, लेकिन मि. गोयनका की "प्रेमिका" बनकर हमेशा सामाजिक स्वीकृति से वंचित रहती है। प्रेम संबंध उसे सुरक्षा या पूर्णता नहीं दे पाता, बल्कि वह बार–बार अकेलेपन, हीनता और पछतावे से जूझती रहती है। गोयनका के परिवार से आत्मीय जुड़ाव के बावजूद वह एक "अजनबी" बनी रहती है। वह अपने काम में खुद को व्यस्त रखकर भावनात्मक खालीपन को भरने की कोशिश करती है, लेकिन भीतर से हमेशा अशांत रहती है। उसे लगता है कि भौतिक सफलता के बावजूद जीवन में सच्ची ज़रूरत किसी अपने के स्नेह और अपनत्व की है। वह कहती है— "औरत जूझती है, धन–यश कमा लेती है, लेकिन ज़रूरत होती है किसी अपने की, एक मानवीय उष्मा की।"

रमा मि. गोयनका से प्रेम तो करती है, पर यह संबंध सामाजिक रूप से अस्वीकृत है। रिश्ते की असुरक्षा, आत्मग्लानि और समाज के भय ने उसे भीतर से तोड़ दिया है, फिर भी वह इस प्रेम को छोड़ नहीं पाती। प्रेम

के प्रति उसकी आसक्ति इतनी गहरी है कि वह समाज से घृणा करने लगती है। उसके लिए प्रेम ही अंतिम सत्य है, समाज नहीं। रमा का अकेलापन, उसकी अस्वीकृति और भावनात्मक उतार–चढ़ाव, उसे एक बेचैन आत्मा बना देते हैं। वहीं, गोयनका की बेटी रीतू भी अपने भविष्य को लेकर आशंकित है— क्या वह अकेलेपन को सह पाएगी? दूसरी ओर, मिसेज गोयनका रमा के आत्मविश्वास और जीवनशैली को देखकर हीन भावना से भर जाती हैं। यह उपन्यास स्त्री के मानसिक संघर्ष, प्रेम और अस्मिता की जटिलता तथा सामाजिक मान्यताओं के विरोध में खड़ी उसकी चेतना को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ उजागर करता है।

'पीली आंधी' उपन्यास की छोटी बीणनी के विवाह के दस दिन बाद उसका पति किशन व्यापार करने हेतु दिसावरी जाता है तब वह कौए के साथ संदेश भेजती है। सोमा अपनी बहन–भावना के विवाह के समय मायके जाती है और वहाँ अपने ससुराल वालों की बुराई सुनती है, तो वह गुस्सा होती है। ससुराल और मायके के संस्कारों में अंतर को देखकर भी सोमा के मन में व्छंद उपस्थित होता है। यौन तृप्ति और पति का प्रेम प्राप्त न होने पर सोमा के मन में तरह–तरह के प्रश्न उपस्थित होते हैं, "आखिर गलत क्या है? ऐसा कौन–सा अपराध मैं कर रही हूँ..? क्या कभी विवाहित स्त्री ने अन्य विवाहित पुरूष को प्यार नहीं किया? फिर यह भय और ग्लानि क्यों?" इन पात्रों के माध्यम से प्रभा खेतान ने स्त्री की अंतरात्मा, अकेलापन, प्रेम की भूख और सामाजिक अस्वीकार की गहरी पीड़ा को मार्मिक रूप से चित्रित किया है।

प्रभा खेतान के **'स्त्री–पक्ष'** उपन्यास की वृंदा अकेलेपन, असुरक्षा और अस्मिता की चिंता में घिरी रहती है। घुटन भरे जीवन से मुक्ति की चाह में वह एक ऐसे आदर्श पुरुष की कल्पना करती है जो उसे सुरक्षा और प्रेम दे सके। किशोरावस्था की यौन जिज्ञासा उसमें तीव्र परितृप्ति की आकांक्षा जगाती है, लेकिन प्रेमी अनीश की यौन अपेक्षाएँ उसे द्वंद्व में डाल देती हैं। प्रेम और घृणा के बीच उलझी वृंदा भय, असहायता और अस्मिता संकट से ग्रस्त रहती है। वह समझती है कि अकेली स्त्री अपनी गरिमा की रक्षा नहीं कर सकती, इसलिए पति रूपी रक्षक की आवश्यकता अनुभव करती है और सुमित से विवाह का निर्णय लेती है।

विवाह के बाद भी उसका मानसिक संघर्ष समाप्त नहीं होता। पिंकी की स्वतंत्र जीवनशैली देखकर उसमें ईर्ष्या और हीनता की भावना जन्म लेती है। सुमित से तलाक होने के बाद वह आत्मविश्लेषण, पछतावे और एकाकी जीवन की त्रासदी से जूझती है। उपन्यास में वृंदा का चरित्र स्त्री के भीतर के असुरक्षित, भावुक और आत्मसंघर्षरत मन की गहन पड़ताल प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष :

प्रभा खेतान के उपन्यासों का केंद्रीय विषय स्त्री और उसकी मानसिक दुनिया है। उन्होंने नारी के भीतर चल रहे भावनात्मक संघर्षों, पीड़ाओं और दुविधाओं को मनोवैज्ञानिक धरातल पर अत्यंत संवेदनशीलता से उकेरा है। 'आओ पेपे, घर चलें' की लारा और मरील प्रेम की कमी से उत्पन्न मानसिक वेदना से गुजरती हैं। नायिका प्रभा अविवाहित होने के कारण सामाजिक अस्वीकृति और अकेलेपन का दंश झेल रही है, जिससे उसमें आत्महीनता की भावना घर कर जाती है। हेल्गा अपने पति के दुर्व्यवहार के कारण प्रतिशोध की भावना से भर जाती है, जबकि कैथी अधूरे प्रेम के कारण मानसिक असंतुलन से पीड़ित है। आइलिन का जीवन स्थायित्वहीनता के कारण अशांत हो गया है।

'अग्निसंभवा' की आइवी अपने पुत्र की हत्या के बाद गहरे मानसिक आघात से ग्रस्त होकर संतुलन खो बैठती है; उसका निरंतर रोना और अवसाद उसकी आंतरिक वेदना का प्रतीक है। 'एड्स' की प्रभा भी अविवाहित जीवन के अकेलेपन से पीड़ित है। वहीं 'छिन्नमस्ता' की प्रिया और 'अपने–अपने चेहरे' की रमा, व्यवसायिक रूप से सफल होने के बावजूद पारिवारिक और सामाजिक उपेक्षा के कारण भावनात्मक द्वंद्व में उलझी रहती हैं। दोनों पात्रों में प्रेम और यौनाकर्षण के साथ–साथ आत्मसम्मान की रक्षा का संघर्ष भी दृष्टिगत होता है।

'पीली आंधी' की सोमा असफल वैवाहिक जीवन की पीड़ा से मानसिक रूप से अस्थिर हो जाती है, जबकि 'स्त्री–पक्ष' की वृंदा स्त्री की सामाजिक समस्याओं से उत्पन्न हीनता और आत्मग्लानि से भीतर ही भीतर जूझती रहती है। प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री के मानसिक संत्रास, कुंठा, असुरक्षा, चिंता, आत्मवेदना, ईर्ष्या और पराजय–बोध का यथार्थपरक चित्रण मिलता है, जो उन्हें हिंदी साहित्य में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विशिष्ट बनाता है।

सन्दर्भ सूची :

1. खेतान, प्रभा. आओ पेपे, घर चले. वाणी प्रकाशन, 1991, पृ. 68.
2. खेतान, प्रभा. "अग्निसंभवा." हंस, अप्रैल 1992, पृ. 57.
3. खेतान, प्रभा. "अग्निसंभवा." हंस, अप्रैल 1992, पृ. 58.
4. खेतान, प्रभा. "अग्निसंभवा." हंस, अप्रैल 1992, पृ. 60.
5. खेतान, प्रभा. "एड्स." पूजा वार्षिकांक, आज, पृ. 67.
6. खेतान, प्रभा. छिन्नमस्ता. राजकमल प्रकाशन, 1993, पृ. 20.
7. वेंकटेश्वर, एम. हिन्दी के समकालीन महिला उपन्यासकार. पृ. 102.
8. खेतान, प्रभा. छिन्नमस्ता. राजकमल प्रकाशन, 1993, पृ. 173.
9. खेतान, प्रभा. अपने–अपने चेहरे. किताब घर, 1996, पृ. 19.
10. खेतान, प्रभा. पीली आँधी. लोकभारती प्रकाशन, 1996, पृ. 242.
11. खेतान, प्रभा. "स्त्री पक्ष." जनसत्ता सबरंग, 1999, पृ. 21.